

Pradeep

05 Mar 1987

लिंग
जन्म तिथि
दिन
जन्म समय
इष्ट
स्थान
राज्य
देश

अक्षांश
रेखांश
मध्य रेखांश
स्थानिक संस्कार
ग्रीष्म संस्कार
स्थानिक समय
वेलान्तर
साम्पातिक काल
सूर्योदय
सूर्यास्त
दिनमान
सूर्य स्थिति(अयन)
सूर्य स्थिति(गोल)
ऋतु
सूर्य के अंश
लग्न के अंश

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति
राशि-स्वामी
नक्षत्र-चरण
नक्षत्र स्वामी
योग
करण
गण
योनि
नाड़ी
वर्ण
वश्य
वर्ग
युँजा
हंसक
जन्म नामाक्षर
पाया(राशि-नक्षत्र)
सूर्य राशि(पाश्चात्य)

पुल्लिंग
05/03/1987
गुरुवार
07:15:00 घंटे
02:23:21 घटी
Jeypore
Orissa
India

18:52:00 उत्तर
82:38:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व
00:00:32 घंटे
00:00:00 घंटे
07:15:32 घंटे
-00:11:41 घंटे
18:04:40 घंटे
06:17:39 घंटे
18:04:50 घंटे
11:47:11 घंटे
उत्तरायण
दक्षिण
वसन्त
20:16:24 कुम्भ
07:48:46 मीन

मीन - गुरु
मेष - मंगल
भरणी - 3
शुक्र
ऐन्द्र
कौलव
मनुष्य
गज
मध्य
क्षत्रिय
चतुष्पाद
मृग
पूर्व
अग्नि
ले-लेखपाल
रजत - स्वर्ण
मीन

दादा का नाम
पिता का नाम
माता का नाम
जाति
गोत्र

चैत्रादी संवत शक
माह

पक्ष
सूर्योदय कालीन तिथि
तिथि समाप्ति काल
जन्म तिथि
सूर्योदय कालीन नक्षत्र
नक्षत्र समाप्ति काल
जन्म नक्षत्र
सूर्योदय कालीन योग
योग समाप्ति काल
जन्म योग
सूर्योदय कालीन करण
करण समाप्ति काल
जन्म करण
भयात
भभोग
भोग्य दशा काल

fsgdg
gdh
ghjt
435
siuyyj

2043 / 1908

फाल्गुन

शुक्ल

6

02:35:25

6

भरणी

14:08:07 घंटे

भरणी

ऐन्द्र

13:08:03 घंटे

ऐन्द्र

कौलव

13:54:48 घंटे

कौलव

46:15:42

63:28:30

शुक्र 5 वर्ष 4 मा 13 दि

घात चक्र

मास
तिथि
दिन
नक्षत्र
योग
करण
प्रहर
वर्ग
लग्न
सूर्य
चन्द्र
मंगल
बुध
गुरु
शुक्र
शनि
राहु

कार्तिक
1-6-11
रविवार
मघा
विष्कुम्भ
बव
1
सिंह
मेष
कर्क
मेष
सिंह
वृष
कन्या
तुला
मिथुन
वृश्चिक

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	07:48:46	461:49:07	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	---
सूर्य			कुंभ	20:16:24	01:00:08	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	23:05:13	12:31:19	भरणी	3	2	मंग	शुक्र	शनि	सम राशि
मंग			मेष	14:53:27	00:41:07	भरणी	1	2	मंग	शुक्र	शुक्र	स्वराशि
बुध	व	अ	कुंभ	09:35:27	00:50:10	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
गुरु			मीन	06:52:00	00:14:15	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	स्वराशि
शुक्र			मक	08:21:49	01:10:19	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
शनि			वृश्चि	26:55:11	00:02:34	ज्येष्ठा	4	18	मंग	बुध	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मीन	18:06:07	00:01:49	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
केतु	व		कन्या	18:06:07	00:01:49	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	02:43:48	00:01:24	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
नेप			धनु	13:58:12	00:01:10	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लू	व		तुला	16:09:53	00:00:44	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	07:23:28	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	राहु	--

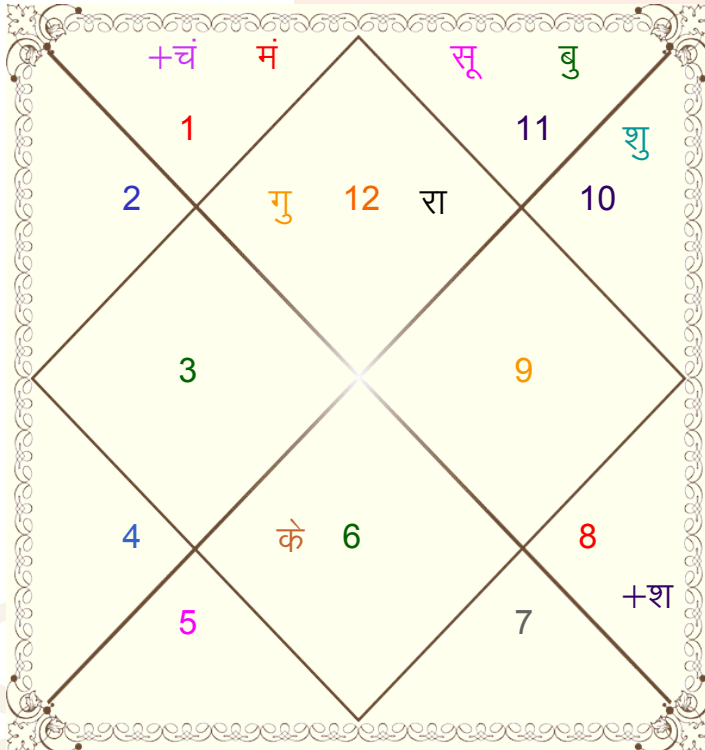
व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

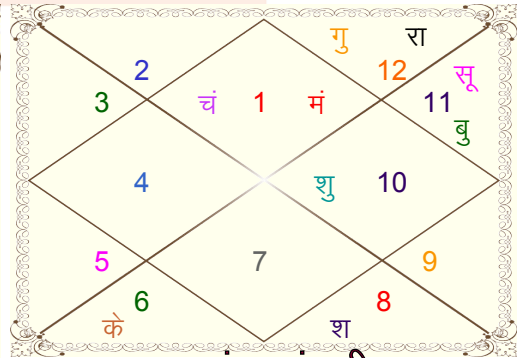
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:37

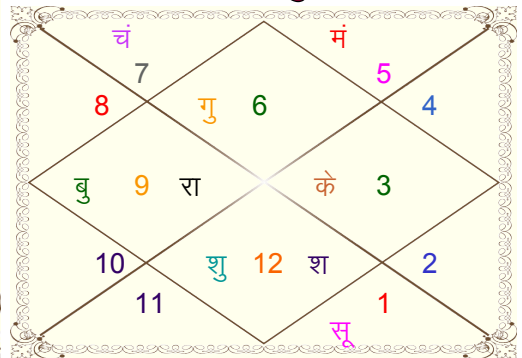
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 22:44:33	मीन 07:48:46
2	मीन 22:44:33	मेष 07:40:20
3	मेष 22:36:07	वृष 07:31:54
4	वृष 22:27:41	मिथुन 07:23:28
5	मिथुन 22:27:41	कर्क 07:31:54
6	कर्क 22:36:07	सिंह 07:40:20
7	सिंह 22:44:33	कन्या 07:48:46
8	कन्या 22:44:33	तुला 07:40:20
9	तुला 22:36:07	वृश्चिक 07:31:54
10	वृश्चिक 22:27:41	धनु 07:23:28
11	धनु 22:27:41	मकर 07:31:54
12	मकर 22:36:07	कुम्भ 07:40:20

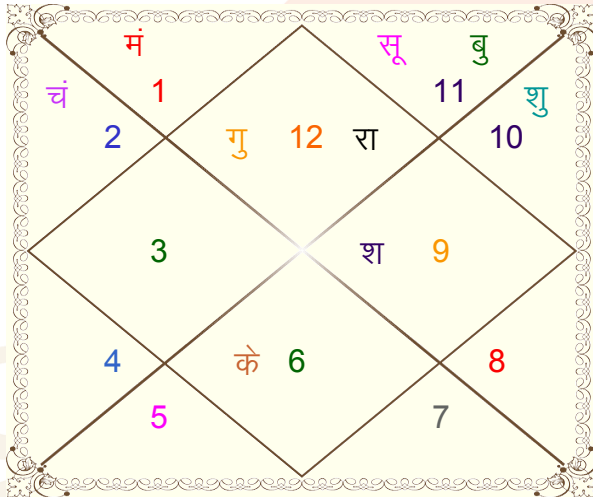
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	07:48:46
2	मेष	13:01:13
3	वृष	11:56:26
4	मिथुन	07:23:28
5	कर्क	02:58:08
6	सिंह	02:14:50
7	कन्या	07:48:46
8	तुला	13:01:13
9	वृश्चिक	11:56:26
10	धनु	07:23:28
11	मकर	02:58:08
12	कुम्भ	02:14:50

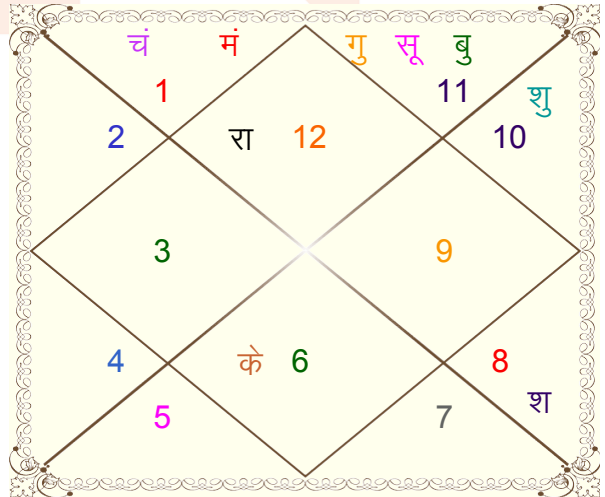
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



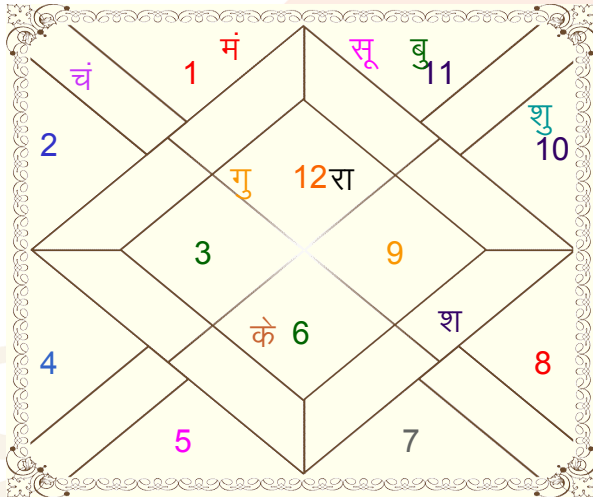
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह कारक अवस्था			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	वृद्ध	खल	कौतुक	7.24	16 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	वृद्ध	शान्त	आगम	4.25	73 %
मंग	मातृ	भ्रातृ	युवा	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	4.30	49 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	कुमार	विकल	प्रकाश	0.00	36 %
गुरु	कलत्र	धन	वृद्ध	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	3.61	46 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	वृद्ध	मुदित	नृत्यलिप्सा	6.01	60 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल	खल	नृत्यलिप्सा	1.59	42 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	निपीदित	प्रकाश	0.00	31 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	31 %
कुल						26.99	

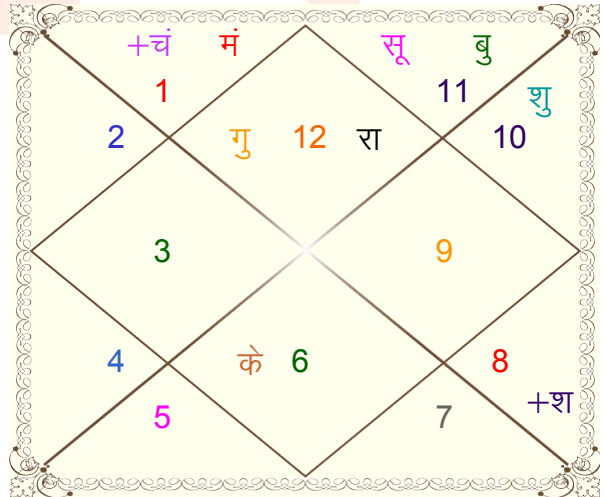
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक 5 वर्ष 4 मास 13 दिन

शुक	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु
05/03/1987	17/07/1992	18/07/1998	17/07/2008	18/07/2015
17/07/1992	18/07/1998	17/07/2008	18/07/2015	17/07/2033
शुक 00/00/0000	सूर्य 04/11/1992	चंद्र 18/05/1999	मंग 13/12/2008	राहु 30/03/2018
सूर्य 00/00/0000	चंद्र 05/05/1993	मंग 17/12/1999	राहु 01/01/2010	गुरु 23/08/2020
चंद्र 00/00/0000	मंग 10/09/1993	राहु 17/06/2001	गुरु 08/12/2010	शनि 30/06/2023
मंग 00/00/0000	राहु 05/08/1994	गुरु 17/10/2002	शनि 16/01/2012	बुध 16/01/2026
राहु 00/00/0000	गुरु 24/05/1995	शनि 17/05/2004	बुध 13/01/2013	केतु 03/02/2027
गुरु 05/03/1987	शनि 05/05/1996	बुध 17/10/2005	केतु 11/06/2013	शुक 03/02/2030
शनि 17/07/1988	बुध 11/03/1997	केतु 18/05/2006	शुक 11/08/2014	सूर्य 29/12/2030
बुध 18/05/1991	केतु 17/07/1997	शुक 16/01/2008	सूर्य 17/12/2014	चंद्र 29/06/2032
केतु 17/07/1992	शुक 18/07/1998	सूर्य 17/07/2008	चंद्र 18/07/2015	मंग 17/07/2033

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक
17/07/2033	17/07/2049	17/07/2068	17/07/2085	17/07/2092
17/07/2049	17/07/2068	17/07/2085	17/07/2092	00/00/0000
गुरु 04/09/2035	शनि 20/07/2052	बुध 14/12/2070	केतु 13/12/2085	शुक 17/11/2095
शनि 18/03/2038	बुध 30/03/2055	केतु 11/12/2071	शुक 13/02/2087	सूर्य 16/11/2096
बुध 23/06/2040	केतु 08/05/2056	शुक 11/10/2074	सूर्य 20/06/2087	चंद्र 18/07/2098
केतु 30/05/2041	शुक 09/07/2059	सूर्य 17/08/2075	चंद्र 19/01/2088	मंग 17/09/2099
शुक 29/01/2044	सूर्य 20/06/2060	चंद्र 16/01/2077	मंग 17/06/2088	राहु 17/09/2102
सूर्य 16/11/2044	चंद्र 19/01/2062	मंग 13/01/2078	राहु 05/07/2089	गुरु 18/05/2105
चंद्र 18/03/2046	मंग 28/02/2063	राहु 01/08/2080	गुरु 11/06/2090	शनि 06/03/2107
मंग 22/02/2047	राहु 04/01/2066	गुरु 07/11/2082	शनि 21/07/2091	बुध 00/00/0000
राहु 17/07/2049	गुरु 17/07/2068	शनि 17/07/2085	बुध 17/07/2092	केतु 00/00/0000

— उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक 5 वर्ष 5 मा 3 दि होता है।

— उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा-प्रत्यन्तर

मंग-शुक्र		मंग-सूर्य		मंग-चंद्र		राहु-राहु		राहु-गुरु	
11/06/2013		11/08/2014		17/12/2014		18/07/2015		30/03/2018	
11/08/2014		17/12/2014		18/07/2015		30/03/2018		23/08/2020	
शुक्र	21/08/2013	सूर्य	17/08/2014	चंद्र	03/01/2015	राहु	13/12/2015	गुरु	25/07/2018
सूर्य	11/09/2013	चंद्र	28/08/2014	मंग	16/01/2015	गुरु	22/04/2016	शनि	11/12/2018
चंद्र	17/10/2013	मंग	04/09/2014	राहु	17/02/2015	शनि	25/09/2016	बुध	14/04/2019
मंग	10/11/2013	राहु	24/09/2014	गुरु	17/03/2015	बुध	12/02/2017	केतु	04/06/2019
राहु	13/01/2014	गुरु	11/10/2014	शनि	20/04/2015	केतु	11/04/2017	शुक्र	28/10/2019
गुरु	11/03/2014	शनि	31/10/2014	बुध	20/05/2015	शुक्र	22/09/2017	सूर्य	11/12/2019
शनि	18/05/2014	बुध	18/11/2014	केतु	02/06/2015	सूर्य	10/11/2017	चंद्र	22/02/2020
बुध	17/07/2014	केतु	25/11/2014	शुक्र	07/07/2015	चंद्र	31/01/2018	मंग	13/04/2020
केतु	11/08/2014	शुक्र	17/12/2014	सूर्य	18/07/2015	मंग	30/03/2018	राहु	23/08/2020
राहु-शनि		राहु-बुध		राहु-केतु		राहु-शुक्र		राहु-सूर्य	
23/08/2020		30/06/2023		16/01/2026		03/02/2027		03/02/2030	
30/06/2023		16/01/2026		03/02/2027		03/02/2030		29/12/2030	
शनि	03/02/2021	बुध	08/11/2023	केतु	07/02/2026	शुक्र	05/08/2027	सूर्य	20/02/2030
बुध	01/07/2021	केतु	02/01/2024	शुक्र	12/04/2026	सूर्य	29/09/2027	चंद्र	19/03/2030
केतु	31/08/2021	शुक्र	05/06/2024	सूर्य	01/05/2026	चंद्र	29/12/2027	मंग	07/04/2030
शुक्र	20/02/2022	सूर्य	22/07/2024	चंद्र	02/06/2026	मंग	02/03/2028	राहु	26/05/2030
सूर्य	13/04/2022	चंद्र	07/10/2024	मंग	25/06/2026	राहु	13/08/2028	गुरु	09/07/2030
चंद्र	09/07/2022	मंग	01/12/2024	राहु	21/08/2026	गुरु	07/01/2029	शनि	30/08/2030
मंग	08/09/2022	राहु	19/04/2025	गुरु	11/10/2026	शनि	29/06/2029	बुध	16/10/2030
राहु	11/02/2023	गुरु	21/08/2025	शनि	11/12/2026	बुध	01/12/2029	केतु	04/11/2030
गुरु	30/06/2023	शनि	16/01/2026	बुध	03/02/2027	केतु	03/02/2030	शुक्र	29/12/2030
राहु-चंद्र		राहु-मंग		गुरु-गुरु		गुरु-शनि		गुरु-बुध	
29/12/2030		29/06/2032		17/07/2033		04/09/2035		18/03/2038	
29/06/2032		17/07/2033		04/09/2035		18/03/2038		23/06/2040	
चंद्र	13/02/2031	मंग	21/07/2032	गुरु	29/10/2033	शनि	29/01/2036	बुध	13/07/2038
मंग	16/03/2031	राहु	17/09/2032	शनि	02/03/2034	बुध	08/06/2036	केतु	30/08/2038
राहु	07/06/2031	गुरु	07/11/2032	बुध	20/06/2034	केतु	01/08/2036	शुक्र	15/01/2039
गुरु	19/08/2031	शनि	07/01/2033	केतु	04/08/2034	शुक्र	02/01/2037	सूर्य	26/02/2039
शनि	13/11/2031	बुध	02/03/2033	शुक्र	12/12/2034	सूर्य	18/02/2037	चंद्र	06/05/2039
बुध	30/01/2032	केतु	24/03/2033	सूर्य	20/01/2035	चंद्र	06/05/2037	मंग	23/06/2039
केतु	02/03/2032	शुक्र	27/05/2033	चंद्र	26/03/2035	मंग	29/06/2037	राहु	25/10/2039
शुक्र	01/06/2032	सूर्य	15/06/2033	मंग	11/05/2035	राहु	14/11/2037	गुरु	13/02/2040
सूर्य	29/06/2032	चंद्र	17/07/2033	राहु	04/09/2035	गुरु	18/03/2038	शनि	23/06/2040

विंशोत्तरी दशा-प्रत्यन्तर

गुरु-केतु		गुरु-शुक्र		गुरु-सूर्य		गुरु-चंद्र		गुरु-मंग	
23/06/2040		30/05/2041		29/01/2044		16/11/2044		18/03/2046	
30/05/2041		29/01/2044		16/11/2044		18/03/2046		22/02/2047	
केतु	13/07/2040	शुक्र	08/11/2041	सूर्य	12/02/2044	चंद्र	26/12/2044	मंग	07/04/2046
शुक्र	07/09/2040	सूर्य	27/12/2041	चंद्र	08/03/2044	मंग	24/01/2045	राहु	28/05/2046
सूर्य	24/09/2040	चंद्र	18/03/2042	मंग	25/03/2044	राहु	07/04/2045	गुरु	12/07/2046
चंद्र	23/10/2040	मंग	14/05/2042	राहु	07/05/2044	गुरु	11/06/2045	शनि	04/09/2046
मंग	12/11/2040	राहु	07/10/2042	गुरु	15/06/2044	शनि	27/08/2045	बुध	23/10/2046
राहु	02/01/2041	गुरु	14/02/2043	शनि	01/08/2044	बुध	04/11/2045	केतु	11/11/2046
गुरु	16/02/2041	शनि	18/07/2043	बुध	11/09/2044	केतु	02/12/2045	शुक्र	07/01/2047
शनि	11/04/2041	बुध	03/12/2043	केतु	28/09/2044	शुक्र	21/02/2046	सूर्य	24/01/2047
बुध	30/05/2041	केतु	29/01/2044	शुक्र	16/11/2044	सूर्य	18/03/2046	चंद्र	22/02/2047
गुरु-राहु		शनि-शनि		शनि-बुध		शनि-केतु		शनि-शुक्र	
22/02/2047		17/07/2049		20/07/2052		30/03/2055		08/05/2056	
17/07/2049		20/07/2052		30/03/2055		08/05/2056		09/07/2059	
राहु	03/07/2047	शनि	07/01/2050	बुध	06/12/2052	केतु	23/04/2055	शुक्र	17/11/2056
गुरु	28/10/2047	बुध	12/06/2050	केतु	02/02/2053	शुक्र	29/06/2055	सूर्य	14/01/2057
शनि	15/03/2048	केतु	15/08/2050	शुक्र	16/07/2053	सूर्य	20/07/2055	चंद्र	20/04/2057
बुध	17/07/2048	शुक्र	14/02/2051	सूर्य	03/09/2053	चंद्र	22/08/2055	मंग	26/06/2057
केतु	06/09/2048	सूर्य	10/04/2051	चंद्र	24/11/2053	मंग	15/09/2055	राहु	17/12/2057
शुक्र	30/01/2049	चंद्र	11/07/2051	मंग	20/01/2054	राहु	15/11/2055	गुरु	20/05/2058
सूर्य	15/03/2049	मंग	13/09/2051	राहु	16/06/2054	गुरु	08/01/2056	शनि	19/11/2058
चंद्र	27/05/2049	राहु	25/02/2052	गुरु	26/10/2054	शनि	12/03/2056	बुध	02/05/2059
मंग	17/07/2049	गुरु	20/07/2052	शनि	30/03/2055	बुध	08/05/2056	केतु	09/07/2059
शनि-सूर्य		शनि-चंद्र		शनि-मंग		शनि-राहु		शनि-गुरु	
09/07/2059		20/06/2060		19/01/2062		28/02/2063		04/01/2066	
20/06/2060		19/01/2062		28/02/2063		04/01/2066		17/07/2068	
सूर्य	26/07/2059	चंद्र	07/08/2060	मंग	12/02/2062	राहु	03/08/2063	गुरु	07/05/2066
चंद्र	24/08/2059	मंग	10/09/2060	राहु	13/04/2062	गुरु	20/12/2063	शनि	01/10/2066
मंग	13/09/2059	राहु	05/12/2060	गुरु	06/06/2062	शनि	02/06/2064	बुध	09/02/2067
राहु	04/11/2059	गुरु	20/02/2061	शनि	09/08/2062	बुध	27/10/2064	केतु	04/04/2067
गुरु	20/12/2059	शनि	23/05/2061	बुध	06/10/2062	केतु	27/12/2064	शुक्र	05/09/2067
शनि	13/02/2060	बुध	13/08/2061	केतु	29/10/2062	शुक्र	18/06/2065	सूर्य	21/10/2067
बुध	03/04/2060	केतु	16/09/2061	शुक्र	05/01/2063	सूर्य	09/08/2065	चंद्र	06/01/2068
केतु	23/04/2060	शुक्र	21/12/2061	सूर्य	25/01/2063	चंद्र	04/11/2065	मंग	29/02/2068
शुक्र	20/06/2060	सूर्य	19/01/2062	चंद्र	28/02/2063	मंग	04/01/2066	राहु	17/07/2068

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 9, 6
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सौंपकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है। सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्न:	पुखराज	स्वास्थ्य,व्यावसायिक उन्नति,	
भाग्य रत्न:	मूंगा	धन,भाग्योदय,	
कारक रत्न:	मोती	धन,सन्तति सुख,	
दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र-जप / व्रत / दान / लाभ
शुक्र	पुखराज	80%	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
05/03/1987	मूंगा	61%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
17/07/1992	मोती	41%	धनार्जन, पराक्रम, दुर्घटना से बचाव
सूर्य	पुखराज	87%	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
17/07/1992	मूंगा	66%	रविवार,गेहूँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
18/07/1998	मोती	49%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव
चन्द्र	पुखराज	87%	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
18/07/1998	मूंगा	70%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
17/07/2008	मोती	66%	धन, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मंगल	पुखराज	90%	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
17/07/2008	मूंगा	83%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
18/07/2015	मोती	56%	धन, भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव
राहु	पुखराज	87%	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
18/07/2015	मूंगा	63%	शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, तेल
17/07/2033	मोती	46%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव
गुरु	पुखराज	100%	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000)
17/07/2033	मूंगा	70%	गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी
17/07/2049	मोती	53%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति, दुर्घटना से बचाव
शनि	पुखराज	78%	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
17/07/2049	मूंगा	66%	शनिवार,उडद, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, दूध
17/07/2068	मोती	49%	भाग्योदय, धनार्जन, दुर्घटना से बचाव

भाग्य रत्न

आपका शुभ रत्न –लहसुनिया

आपका जन्म मीन राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह गुरु होता है। लहसुनिया रत्न केतु ग्रह के लिये धारण किया जाता है केतु का फल मंगल के समान माना जाता है। मंगल मीन राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि मंगल की वृश्चिक राशि मीन लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी जातक द्वारा किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः मीन राशि के लग्न वाले जातकों को लहसुनिया रत्न धारण करके केतु या मंगल को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। केतु ग्रह के लिये लहसुनिया रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी केतु आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को टोना, टोटका जैसे अशुभ फलों से मुक्ति व राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को नाना-नानी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। केतु ग्रह मोक्ष का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको कोई गंभीर संक्रामक रोग हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

लहसुनिया को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है तथा सूर्य सभी ग्रहों का राजा होता है। लहसुनिया केतु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् मंगलवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल मंगल की होरा में श्रेष्ठ होता है। मंगलवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय मंगल की होरा का होता है। लहसुनिया को यदि मंगलवार के साथ-साथ केतु के नक्षत्र अर्थात् अश्विनी, मघा और मूल में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लहसुनिया को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर लाल रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, केतु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

केतु का मंत्र – ॐ कं केतवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात् यदि केतु से संबंधित पदार्थ जैसे नारियल, सतनाजा सवा

मीटर लाल कपड़े का दान करें तो लहसुनिया की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन केतु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। यह लहसुनिया की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक मंगलवार को काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाना भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

मीन लग्न वाले जातक यदि लहसुनिया की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है । शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/03/1987-16/12/1987
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/08/1995-16/04/1998
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/04/1998-05/06/2000
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/06/2000-22/07/2002
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/09/2004-01/11/2006

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/03/2025-26/10/2027
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/10/2027-11/04/2030
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/04/2030-25/05/2032
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	09/09/2054-01/04/2057
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/04/2057-22/05/2059
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/05/2059-05/07/2061
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बदनामी
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	धन
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सन्तति कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपमा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उमुद की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ॥

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा अंगुली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्॥

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रमा के साथ जन्म कुंडली में स्थित है। अतः आप चन्द्र कुण्डली से मांगलिक हैं। परन्तु मंगल का योग चन्द्रमा से होने पर आपका मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है। ऐसा मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप मानसिक तथा शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे। परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब होगा परन्तु विवाह अत्यन्त ही सुखद एवं शान्त वातावरण में सम्पन्न होगा। किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य सुख का उपभोग कर सकेंगे।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आप एक स्वस्थ पुरुष होंगे तथा मानसिक रूप से भी कभी विचलित नहीं रहेंगे। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से सुख संसाधनों से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप चल या अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी प्राप्त कर सकेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे स्वभाव से क्रोध के भाव को प्रदर्शित करेंगी। इससे दाम्पत्य जीवन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से शारीरिक कुशलता बनी रहेगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी यथा समय सिद्ध होते रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से शान्ति प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली में मांगलिक दोष उचित नियमानुसार भंग हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो आप

अत्यन्त ही भाग्यशाली पुरुष सिद्ध होंगे। आप भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगे। साथ ही समाज में भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। आपकी पत्नी भी एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा आपके परस्पर संबंध भी हमेशा मधुर रहेंगे एवं अनावश्यक तनाव तथा कटुता से आप मुक्त ही रहेंगे।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान के समय समान भाव में मंगल की यदि आवश्यक न हो तो उपेक्षा ही करें क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न होती हैं जिससे यदा कदा आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ रहेगा एवं दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सोच समझ कर इस विषय में अन्तिम निर्णय लेना चाहिए।



कालसर्प योग

अग्ने राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं—

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्णरूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।



ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य

समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरों की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, घ्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

शारीरिक गठन, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा सरलता एवं समानता का इनको प्रतीक माना जाता है। इनके मुख मंडल पर सौम्यता की छाप हमेशा विद्यमान रहती है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करने में समर्थ रहते हैं। इनके विचारों से सामाजिक लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने की इनकी प्रबल इच्छा रहती है तथा इससे इन्हें प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं एवं विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करने आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मननशीलता का भाव भी इनमें रहता है।

प्राकृतिक द्रश्यों का अवलोकन करके इनको शांति एवं सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है। प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुक रहते हैं परन्तु व्यवहार कुशल होते हैं। अतः सांसारिक कार्यों में उचित सफलता अर्जित करके अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन आदि में इनकी रुचि रहती है तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान रहेंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीक्ष्ण रहेगी अतः विभिन्न शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके आप एक विद्वान के रूप में समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं आदर बढ़ाने में समर्थ होंगे। एक विचारक के रूप में भी आप सम्मानीय होंगे। यद्यपि ब्रह्मादि के विषय में चिन्तनशील रहेंगे परन्तु भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका स्वरूप दर्शनीय एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। लेखन के प्रति आपकी रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप आदर एवं प्रतिष्ठा भी अर्जित कर सकते हैं। अभिमान के भाव की आप में अल्पता होगी तथा सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगे। आप सरकार या समाज में सम्मान प्राप्त करने में सफल होंगे। आप में दयालुता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त साहित्य एवं कला के प्रति भी आपकी अभिरुचि रहेगी।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। बाल्यावस्था में आपको संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु युवावस्था के बाद आप सुखैश्वर्य एवं धन वैभव तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख एवं शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इससे आपको आत्मिक शांति की प्राप्ति होगी। साथ ही बन्धु एवं मित्र वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप धनैश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रुचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

माता, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, जायदाद एवं शिक्षा

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते हैं।

बुद्धि, सन्तान एवं प्रणय सम्बन्ध

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलाओं पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शों से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यर्थाथवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्ति के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलाओं से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

दम्पति, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रियवक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यशाली एवं विविध कार्यों में दक्ष होता है तथा वह शिक्षित विद्वान प्रसिद्ध सांसारिक कार्यों में दक्ष एवं कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की विनम्र एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने संभाषण हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी साथ ही वह स्वच्छता प्रिय होंगी एवं सफाई के प्रति विशेष सजग होंगी सांसारिक कार्य कलाओं को करने में वह चतुर होंगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सडोलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा शरीर भी आकर्षक रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति भी उनकी रुचि होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से आपका विवाह बंधु एवं संबन्धी के सहयोग से सम्पन्न होगा विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति सम्मान आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। सांसारिक महत्त्व के कार्यों को आप परस्पर सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे आपस में विश्वास एवं समानता का भाव उत्पन्न होगा। इससे दाम्पत्य संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह मिलेगा। साथ ही आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान देंगे एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों में उनकी भी सलाह लेंगे जिससे आपस में विश्वसनीयता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का हार्दिक सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुःख में उनकी माता पिता के समान सेवा करेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी जिससे परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा।

व्यापार या अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के समीपस्थ संबन्धी से साझेदारी की जाए तो इससे शुभ फल प्राप्त होंगे एवं परस्पर विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

पिता, व्यवसाय एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है धनु राशि अग्नि तत्व राशि है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही परिश्रमी स्वभाव होने के साथ आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र लिपिकीय कार्य, लेखाकार, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतषी, पुस्तक विक्रेता सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, संदेश वाहक तथा टेलिफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको उन्नति मार्ग सदैव प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको अपनी चहुँमुखी उन्नति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए उपरोक्त विभागों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने, आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही चित्रकारी, कला आदि के स्वतंत्र व्यवसाय से भी आप लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः आप व्यापार करने के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही आपको अपने कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे बिना किसी बाधा के आप उन्नति कर सकेंगे।

जीवन में आपको मानसम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं बिद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता बुद्धिमान विद्वान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे तथा आपको एक योग्य व्यक्ति के रूप में देखना चाहेंगे। आपको कार्यक्षेत्र की प्रारम्भिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही आप भी योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धांतिक समानता बनी रहेगी इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिकता का भाव भी होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

फलादेश - 2014

इस वर्ष में बृहस्पति की गोचरवश स्थिति चतुर्थ भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी समय अच्छा रहेगा एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि भी अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग परस्पर प्रेमपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष में आपके सोचे हुए कार्य एवं अन्य योजनाएँ भी कार्यान्वित होंगी। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में समय सामान्य उन्नति दायक रहेगा तथा परिश्रमपूर्वक लाभ एवं धन की भी प्राप्ति होगी फलतः आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी। इस समय मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आप सहयोग अर्जित करेंगे। जायदाद या वाहन सम्बन्धी सुख भी इस समय प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ष में आप माता एवं ससुराल से लाभ अर्जित करेंगे परन्तु आयगोचरफल तथा दशाफल इस समय प्रतिकूल रहेंगे अतः उपर्युक्त शुभ फल अल्प मात्रा में ही घटित होंगे तथा आपको संघर्ष एवं परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा।

इस वर्ष में शनि गोचर वश सप्तम भाव में परिभ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पत्नी भी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है फलतः दाम्पत्य सुख में यदा कदा न्यूनता की अनुभूति होगी। व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र में नवीन कार्य प्रारंभ न करें तथा साझेदारों से भी सावधान रहें। इस समय इस क्षेत्र में आप परिश्रम एवं संघर्ष से किंचित सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य ही रहेगी तथा आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा जिससे मानसिक तनाव भी उत्पन्न होगा। इस समय आपको अनावश्यक यात्राओं तथा भ्रमण आदि की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि इसमें लाभ की अपेक्षा व्यय ही अधिक होगा तथा यात्रा के मध्य कोई शारीरिक या मानसिक परेशानी भी हो सकती है।

इसके अतिरिक्त इस वर्ष में अन्य गोचर फल तथा दशाफल भी विशेष शुभ फलदायक नहीं रहेंगे। अतः सांसारिक महत्व के कार्यों में आप अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष से ही अन्य सुख एवं सफलता अर्जित कर सकेंगे। साथ ही आप आवास या जायदाद संबंधी योजना का प्रारूप भी तैयार कर सकते हैं लेकिन आपको यह वर्ष बुद्धिमता पूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

इस वर्ष में गोचरीय भ्रमण के अनुसार राहु की स्थिति सप्तम तथा केतु की राशि में रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। इस समय शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा एवं यथा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी हो सकता है। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष से सम्पन्न होंगे। तभी किंचित लाभ एवं सुख की प्राप्ति हो सकती है। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य ही रहेगी एवं व्ययाधिक्य के कारण यदा कदा कोई परेशानी भी हो सकती है। व्यापार या कार्य क्षेत्र में इस समय साझेदार या सहयोगियों से आपके लिए न्यूनाधिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती है अतः इनसे इस समय पूर्ण सतर्क रहना चाहिए। इस समय आपको अपने समस्त सांसारिक कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करना चाहिए।

इसके साथ ही अन्य गोचर एवं दशा का प्रभाव भी शुभ नहीं रहेगा। जिससे कार्य या व्यापार आदि में परेशानियां रहेंगी तथा आय स्रोतों में भी व्यवधान आएंगे। अतः शुभ फलों में वृद्धि तथा अशुभ फलों में न्यूनता करने के लिए आपको राहु केतु की नियमित पूजा जप तथा दानादि कार्य सम्पन्न करने चाहिए।



फलादेश - 2015

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। शारीरिक रूप से इस समय आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी वृद्धि होगी। एवं सभी लोग परस्पर मिलजुल कर रहेंगे। इस समय आपकी योजनाएं भी पूर्ण होंगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए यह वर्ष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष मध्यम रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। सम्पर्क के लोगो से इस समय आपको प्रशंसा मिलेगी तथा उनके मध्य आपकी मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। इस वर्ष में जायदाद या आवास सम्बन्धी सुख एवं लाभ की भी प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही माता एवं ससुराल पक्ष से सहयोग तथा लाभ भी प्राप्त हो सकता है। लेकिन गोचरफल इस समय अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा शुभ फलदायक रहेगी। अतः उपर्युक्त फलों में यदा कदा विलम्ब या न्यूनता रहेगी परन्तु परिश्रमपूर्वक सफलता मिल सकेगी।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरवश इस वर्ष में राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष तथा प्रतिद्वन्दियों पर भी आप विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। अतः इस वर्ष आप कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षा में या मुकदमे आदि में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक सुदृढता बनी रहेगी। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं रहेगा तथा उदर सम्बन्धी कष्ट अथवा कब्ज या गैस आदि से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इस समय आपके मन में इच्छाओं की भी वृद्धि होगी जिनमें आप यदा कदा व्यय अधिक करेंगे। इस वर्ष में आय गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी परन्तु शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

फलादेश - 2016

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति का भ्रमण पंचम भाव में होगा। अतः यह समय आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस समय ज्योतिष साहित्य एवं संगीत आदि के प्रति आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इनका ज्ञान अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस समय सन्तोषजनक रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति भी हो सकती है। यदि अविवाहित हैं तो किसी प्रेम प्रसंग का शुभारम्भ होगा। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता के लिए भी यह वर्ष आपके लिए उन्नतिकारक रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस वर्ष महत्वपूर्ण राजनेताओं तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्पर्क बनेंगे एवं आपको उनसे मनोवांछित सहयोग तथा लाभ मिलेगा। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग मिलता रहेगा। परन्तु अन्यगोचर फल इस समय शुभ फल प्रदान नहीं करेंगे लेकिन दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भाव दृष्टिगोचर होगा।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरवश इस वर्ष राहु की स्थिति पंचम तथा केतु की एकादश भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से इस वर्ष में आपको शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। इस समय मानसिक रूप से आप शान्त रहेंगे तथा मन में चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ नहीं रहेंगी। सन्तति पक्ष के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक या मानसिक रूप से वे स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा इस समय इच्छित मात्रामें धन एवं लाभ की प्राप्ति होती रहेगी अचानक धनलाभ के योग बनेंगे। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। इस वर्ष किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति या उच्चाधिकारी से आपका निकट का सम्बन्ध बनेगा जिससे भविष्य में आप इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। परन्तु गोचरफल इस वर्ष अशुभ फल देंगे लेकिन दशा शुभ एवं अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी तथा मिश्रित फलों की प्राप्ति होगी।

फलादेश - 2017

गोचरवश बृहस्पति की स्थिति इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी यदा कदा असन्तुष्टि बनी रहेंगी। अतः सांसारिक कार्य में परिश्रम पूर्वक ही आप उन्नति या सफलता अर्जित कर सकेंगे। व्यापार या नौकरी आदि में भी उन्नति के लिए अधिक पराक्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी सफलता प्राप्त हो सकेंगी। साथ ही समय समय पर शत्रु या विरोधी भी आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे लेकिन उनका सामना करने में आप समर्थ होंगे। इस समय आपका यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा लेकिन धन एवं लाभ की प्राप्ति आवश्यकतानुसार होती रहेगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेगी।

इसके साथ ही अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा अच्छी नहीं रहेंगी अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रारंभ में व्यवधान होंगे लेकिन बाद में स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धि से आप उनको सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा परन्तु परिश्रम एवं पराक्रम से आपको शुभ फलों की प्राप्ति भी होती रहेंगी अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको बृहस्पति का उपवाश, पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरवश इस वर्ष राहु की स्थिति पंचम तथा केतु की एकादश भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से इस वर्ष में आपको शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। इस समय मानसिक रूप से आप शान्त रहेंगे तथा मन में चिन्ताएँ तथा परेशानियाँ नहीं रहेंगी। सन्तति पक्ष के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरिक या मानसिक रूप से वे स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा इस समय इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होती रहेगी अचानक धनलाभ के योग बनेंगे। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। इस वर्ष किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति या उच्चाधिकारी से आपका निकट का सम्बन्ध बनेगा जिससे भविष्य में आप

इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। परन्तु गोचरफल इस वर्ष अशुभ फल देंगे लेकिन दशा शुभ एवं अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी तथा मिश्रित फलों की प्राप्ति होगी।



फलादेश - 2018

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा कोई अचानक सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही बेरोजगारों को रोजगार मिलने की भी प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। इस वर्ष अविवाहितों का विवाह भी हो सकता है। दाम्पत्य सुख इस वर्ष आपका उत्तम रहेगा तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धों में भी मधुरता रहेगी। समाज में इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी समय शुभ रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा एवं अतिरिक्त आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन व्यय भी यदा कदा अधिक ही होगा। इसके साथ ही अन्य गोचरफल तथा दशाफल भी उत्तम रहेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण तथा भाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि नवम भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को परास्त करने में आप सफल होंगे तथा समाज में एक प्रभावी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में आपकी छवि बनेगी। धर्म एवं धार्मिक कर्मों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं यत्नपूर्वक आप इनमें अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। परन्तु मानसिक स्थिति इस समय विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा अधिकांशतया आप किंकर्तव्यविमूढ़ से बने रहेंगे। अतः महत्वपूर्ण निर्णय लेने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। लेकिन इस वर्ष में पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है अतः उनका पूर्ण ध्यान रखें। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ फल प्रदान करेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए सौभाग्यपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में गोचरवश आपकी कुडली में राहु की स्थिति। चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से आपके लिए यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप इस समय स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद संबन्धी कोई क्रय विक्रय करेंगे या वाहन आदि पर व्यय करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएँ बनेंगी। कार्यक्षेत्र में भी इस समय आपकी स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता पिता की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ भी अधिक मात्रा में होंगी। अन्य गोचरफल तथा दशा शुभफल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा आपका समय सामान्यतया सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल

(17/07/2008 - 18/07/2015)

मंगल की महादशा 17/07/2008 को आरम्भ और 18/07/2015 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल द्वितीय भाव में अवस्थित है। इसके पूर्व आपकी चन्द्रदशा चल रही थी जिसकी अवधि 10 वर्ष की थी। मंगल के पंचम भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको बच्चों से सुख, उत्तम शिक्षा और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल की इस दशा में आपको धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा-काल में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप में आत्मविश्वास तथा पहल-शक्ति होगी और आप सक्रिय तथा स्फूर्तिवान होंगे। कुछ मौसमी बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। सरदर्द, ज्वर, संक्रमण, ताप संबंधी बीमारियों आदि की सम्भावना है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धन-संपत्ति का संचय करेंगे। आपको पिता से लाभ होगा। आपको कुछ-पैतृक-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। व्यवसाय और जीवन-वृत्ति से उपार्जन में भी वृद्धि होगी। मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। अपनी जीविका के लिये सैन्य सेवा, सर्जरी तथा चिकित्सा कार्य, दन्तचिकित्सा, भूगर्भ-विज्ञानी अथवा रसायनज्ञ के कार्यों का चयन कर सकते हैं। आप असैनिक तथा यांत्रिक अभियंत्रण और औद्योगिक प्रतिष्ठानों में अच्छा करेंगे। लौह-इस्पात, खेल के सामानों, ताम्बे, खनिज पदार्थों आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के लिये दशा उत्तम रहेगी। आपकी आय में वृद्धि तथा पदोन्नति होगी और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लिये समय समृद्धिशाली रहेगा। आय तथा गतिविधियों में वृद्धि होगी। व्यापार का विस्तार हो सकता है और व्यापार से जुड़े लोग व्यस्त रहेंगे। आर्थिक सफलता के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन के सुख मिलेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन की प्राप्ति होगी। मंगल तथा बुध की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद के मामले लाभदायक होंगे। यह अवधि सभी आर्थिक कारोबार के लिए उत्तम है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी तथा शनि और मंगल की अन्तर्दशाओं लम्बी यात्राएँ होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। गणित, विज्ञान तथा प्रशासन व प्रबन्धन से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन लाभदायक होगा। आप परीक्षाओं में सफल होंगे। इस अवधि में आप उच्च शिक्षा भी आरम्भ कर सकते हैं। आप अपने स्वभावगत नेतृत्व तथा बैद्धिक गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके संबंध मधुर रहेंगे। आपके बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर रहेंगे और आपको उनसे बहुत सुख प्राप्त होगा। वे अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे और आप उनसे गौरवान्वित होंगे। आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ मिल सकता है। सद्भावपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने के लिए कटु भाषा का प्रयोग न करें। आपकी माता को इस अवधि में लाभ प्राप्त होगा और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके पिता को उनके शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों का शुभ उद्देश्यों के लिए व्यय होगा और उनकी यात्रा होगी तथा आपके बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, आय, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी जिनसे आपको लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में उसकी अन्तर्दशा के कारण आपको पिता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा होगी। इसके पश्चात् आरम्भ होनेवाली राहु की अन्तर्दशा के कारण समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के कारण आपकी शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सुख में वृद्धि होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा के कारण आय-व्यय समान होंगे और आपकी यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह हो सकता है और साझेदारों से लाभ और सुख की प्राप्ति हो सकती है जबकि केतु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन और छोटी यात्राओं की प्राप्ति हो सकती है जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सन्तान से सुख और निवेश तथा सद्दे में लाभ होगा।

अर्तदशा :- मंगल – शुक्र

(11/06/2013 - 11/08/2014)

इस अवधि में आपको हर कार्य में सफलता मिलेगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। निवेश से लाभ होगा। नये मित्र बनेंगे जो लाभप्रद होंगे। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। संतान से संबंध मधुर होंगे। कला में रुचि से खुशी मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। कोई मंत्री या पार्षद आदि बन सकते हैं। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपके जीवनसाथी समृद्ध होंगे। आपके पिता का उत्साह उत्तम होगा। माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, पति से धन का लाभ होगा, अध्यात्म में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहन समृद्ध होंगे ; विवाह हो सकता है।

आपकी संतान को सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो भागीदार से लाभ होगा, व्यापार में फायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहत सहयोग करेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

नेत्र और कानों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए स्त्रियों के कल्याण की संस्थाओं में दान दें।

अर्तदशा :- मंगल – सूर्य

(11/08/2014 - 17/12/2014)

इस अवधि में आपको कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी मगर कुछ उतार-चढ़ाव रहेंगे। स्पर्धी परेशान कर सकते हैं। विदेश की यात्रा या निवास संभव है। खर्च बढ़ेंगे। आध्यात्मिक उन्नति होगी। सूर्य की छठे भाव पर दृष्टि के कारण धन और उच्चपद प्राप्त हो सकते हैं। कार्यों में सफलता मिलेगी। किरायेदार, मातहत और सहकर्मी सहयोग करेंगे। कार्यालय के वातावरण में सुधार होगा, सरकार से सहायता मिलेगी।

जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता सौभाग्यशाली होंगी; घरेलू सुख उत्तम होगा। भाई-बहनों को प्रसिद्धि, प्रोन्नति, कार्यों में सफलता मिलेगी। संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन जैसे शिक्षा का समापन आदि हो सकते हैं। अगर वे सेवारत हैं तो स्थानांतरण, निवास में परिवर्तन, अप्रत्याशित लाभ हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे। परामर्शदाताओं के कार्य में परिवर्तन या यात्राएं संभव हैं। व्यापारीगण सफल होंगे, स्पर्धियों को परास्त करेंगे।

सामान्य स्वास्थ्य, नेत्र और पैरों की देखभाल करें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

महादशा :- राहु

(18/07/2015 - 17/07/2033)

राहु की महादशा 18/07/2015 को आरम्भ और 17/07/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपको सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु-सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व-गुण और साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान-पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई-बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा उच्च शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सट्टे में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।

अंतर्दशा :- राहु – राहु

(18/07/2015 - 30/03/2018)

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बिना उद्देश्य के इधर-उधर भटक सकते हैं। मित्र और रिश्तेदार आपसे दूर हो सकते हैं क्योंकि आपका व्यवहार शत्रुतापूर्ण हो सकता है। आप स्वार्थी, शक्की, विद्रोही और निम्न कोटि के कर्म करने वाले हो सकते हैं। आपको नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए ; अपने बल पर कार्य करना चाहिए। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, इसके लिए अपरंपरागत उपचार का सहारा ले सकते हैं। विवाहत जीवन में तनाव आ सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंतर्दशा :- राहु – गुरु

(30/03/2018 - 23/08/2020)

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। लग्न में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सुख-सुविधासंपन्न होंगे। व्यायाम करेंगे, जिससे शरीर हष्ट-पुष्ट रहेगा। उत्तम वस्त्र धारण करेंगे, प्रसन्नचित्त रहेंगे। यह अंतर्दशा आपके और आपके परिवार के लिए बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जाप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।